

आशीष: प.पू.आ. श्री रविदेव सूरीश्वरजी म.सा

अर्हम् साईट प्रकाशित

अर्हम् दैनिक

अंक : 81, ता. 20. 6. 2025, शुक्रवार, जेठ वद - 9



धर्मलाभ

जीवन के हर क्षेत्र में...

गुरु का सच्चा आशीर्वाद ही
आत्मा की सबसे बड़ी पूँजी है।

आचार्य श्री रविदेव सूरीजी



आनंदराज की कलम

~ मुनि आगमप्रिय विजय
{आनंदराज}

जो सिर झुकता है गुरु चरणों में

गुरु के चरणों में झुकना भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिक परंपरा में एक अत्यंत महत्वपूर्ण भाव माना गया है। इसका अर्थ केवल शारीरिक झुकाव नहीं होता, बल्कि यह विनम्रता, श्रद्धा और ज्ञान प्राप्ति की आकांक्षा का प्रतीक होता है।

1. विनम्रता का विकास

गुरु के चरणों में झुकने से अहंकार का नाश होता है और शिष्य में नम्रता आती है। यह अध्यात्म की पहली सीढ़ी है।

2. ज्ञान की प्राप्ति

गुरु को ज्ञान का स्रोत माना गया है। जब हम श्रद्धा से उनके चरणों में झुकते हैं, तो हमें उनका आशीर्वाद मिलता है और हमारी समझ और बुद्धि विकसित होती है।

3. कर्म और संस्कारों का शुद्धिकरण

गुरु की उपस्थिति और उनके आशीर्वाद से हमारे पुराने कर्मों और नकारात्मक संस्कारों का क्षय होता है। यह मानसिक और आत्मिक शुद्धि में सहायक होता है।

4. संरक्षण और मार्गदर्शन

गुरु के चरणों में झुकने से हमें उनका मार्गदर्शन और संरक्षण मिलता है, जिससे हम जीवन के कठिन रास्तों पर भी सही निर्णय ले सकते हैं।

5. आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार

गुरु एक शक्तिशाली ऊर्जा स्रोत होते हैं। जब हम उनके चरणों में झुकते हैं, तो हमें वह दिव्य ऊर्जा प्राप्त होती है जो साधना, ध्यान और भक्ति में सहायता करती है।

6. ईगो (अहं) का लोप

गुरु के आगे झुकने से अपने भीतर के अहंकार का विसर्जन होता है, जो आत्मा की सच्ची प्रगति के लिए आवश्यक है।

मार्मिक प्रश्नमंच - 229

पंचम भाव का कारक ग्रह

कौनसा है ???

- (1) गुरु
(2) मंगल
(3) शुक्र
(4) सूर्य
- प्रश्नमंच 228
जवाब (3)
मृत्यु



विजेता : श्री शोभा जैन - जयपुर

ज्योतिष प्रवेशिका पुस्तक प्राप्त करें

मात्र ₹ 200में | 9428913847



Arham Site

अर्हम् साईट

contact : 8849680131

arhamsite9@gmail.com

जवाब 9428913847 पर

whatsapp करें...

झो द्वारा विजेता को नाम

अर्हम् दैनिक में आयेगा

एवं 13 ₹ ईनाम प्राप्त होगा।

आज के अंक लाभार्थी



जैनम् परिवार

शांताकृष्ण - वेस्ट

मुंबई

www.arhamsite.com

क्लिक करें...

आशीष: प.पू.आ. श्री रविदेव सूरेश्वरजी म.सा

अर्हम् साईट प्रकाशित

अर्हम् दैनिक

अंक : 82 , ता. 21. 6. 2025 , शनिवार , जेठ वद - 11



धर्मलाभ

जहाँ सूर्य की पहली किरण ,
पहुँचती है, वहाँ ऊर्जा और ,
आशा जन्म लेती है ।
यही है पूर्व दिशा का वरदान।

आचार्य श्री रविदेव सूरिजी



आनंदराज की कलम

~ मुनि आगमप्रिय विजय
{आनंदराज}

पूर्व दिशा को कैसे बनाएं सौभाग्यशाली ?

पूर्व दिशा (East Direction) वास्तु शास्त्र और ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण दिशा मानी जाती है। इसे सूर्य की दिशा कहा जाता है क्योंकि सूर्य का उदय पूर्व से होता है।

पूर्व दिशा के लाभ (Benefits)

1. ऊर्जा और सकारात्मकता :

पूर्व दिशा सूर्य की दिशा है, इसलिए इससे घर में प्रचुर मात्रा में सकारात्मक ऊर्जा और प्रकाश प्रवेश करता है।

2. बुद्धि और शिक्षा में वृद्धि :

यह दिशा बुध ग्रह से जुड़ी है, जो बुद्धि, शिक्षा और संवाद का कारक है। विद्यार्थियों और पढ़ने-लिखने वालों के लिए यह दिशा शुभ मानी जाती है।

3. आध्यात्मिक उन्नति :

पूर्व दिशा ध्यान और योग के लिए श्रेष्ठ मानी जाती है। इससे मानसिक शांति और आत्मिक विकास होता है।

4. आर्थिक समृद्धि :

अगर इस दिशा को स्वच्छ, खुला और हल्का रखा जाए तो यह घर में धन, समृद्धि और नए अवसर लाती है।

5. उत्तम स्वास्थ्य :

प्राकृतिक रोशनी से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार होता है।

पूर्व दिशा के नुकसान (Disadvantages)

नुकसान तब होते हैं जब इस दिशा का उपयोग अनुचित ढंग से किया जाए या उसमें दोष हो, जैसे:

1. भारी वस्तुएँ या स्टोर रूम :

अगर पूर्व दिशा में भारी सामान, ऊँची दीवारें या स्टोर बना दिया जाए, तो यह मानसिक तनाव, शिक्षा में रुकावट और नौकरी में बाधा ला सकता है।

2. टॉयलेट या बाथरूम :

पूर्व दिशा में शौचालय होना वास्तु दोष माना जाता है। यह पारिवारिक कलह और स्वास्थ्य समस्याएँ ला सकता है।

3. पूर्व दिशा बंद या ढकी हुई हो :

अगर सूर्य की रोशनी घर में न आए, तो इससे आलस्य, थकान और नकारात्मकता बढ़ती है।

मार्मिक प्रश्नमंच - 230

वाणी का अधिकारी ग्रह

कौनसा है ???

- (1) मंगल
- (2) गुरु
- (3) बुध
- (4) चंद्र



प्रश्नमंच 229

जवाब (1)

गुरु

विजेता : श्री भावेश वालाणी - अमदावाद

ज्योतिष प्रवेशिका पुस्तक प्राप्त करें

मात्र ₹ 200में । 9428913847



Arham Site

अर्हम् साईट

contact : 8849680131

arhamsite9@gmail.com

जवाब 9428913847 पर

whatsapp करें...

झो द्वारा विजेता को नाम

अर्हम् दैनिक में आयेगा

एवं 13 ₹ ईनाम प्राप्त होगा।

आज के अंक लाभार्थी



जैनम् परिवार

शांताकृष्ण - वेस्ट

मुंबई

www.arhamsite.com

क्लिक करें...

आशीष: प.पू.आ. श्री रविदेव सूरीश्वरजी म.सा

अर्हम् साईट प्रकाशित

अर्हम् दैनिक

अंक : 83 , ता. 22. 6. 2025 , रविवार , जेठ वद - 12



धर्मलाभ

पश्चिम दिशा सूर्यास्त की याद दिलाती है। जहाँ दिन ढलता है, वहीं जीवन को ठहराव, शांति और आत्मचिंतन का अवसर मिलता है।

आचार्य श्री रविदेव सूरीजी



आनंदराज की कलम

~ मुनि आगमप्रिय विजय
{आनंदराज}

पश्चिम दिशा को कैसे बनाएं सौभाग्यशाली ?

पश्चिम दिशा (West Direction) वास्तु शास्त्र और जीवनशैली के अनुसार कई तरह के फायदे और नुकसान ला सकती है।

पश्चिम दिशा के लाभ (Benefits)

1. स्थिरता और समृद्धि :

यदि घर या कार्यस्थल में पश्चिम दिशा का सही उपयोग किया जाए तो यह आर्थिक स्थिरता और दीर्घकालीन समृद्धि प्रदान कर सकती है।

2. संतान सुख :

पश्चिम दिशा संतान पक्ष से जुड़ी होती है, अतः इस दिशा में बच्चों का कमरा बनवाना शुभ माना जाता है।

3. व्यावसायिक लाभ :

ऑफिस या व्यापारिक प्रतिष्ठानों में पश्चिम दिशा का सही प्रयोग करने से ग्राहकों और क्लाइंट्स की संख्या में वृद्धि हो सकती है।

4. यश और कीर्ति :

यह दिशा यश, मान-सम्मान और सामाजिक प्रतिष्ठा प्रदान करने वाली होती है, विशेषकर अगर यहाँ टॉयलेट या भारी वस्तुएँ न हों।

5. शाम के समय का महत्व :

पश्चिम दिशा सूर्यास्त की दिशा है, यह शांति और विश्राम का प्रतीक होती है। ध्यान और योग के लिए भी यह दिशा लाभकारी है।

पश्चिम दिशा के नुकसान (Disadvantages)

1. अत्यधिक सक्रियता और बेचैनी :

यदि इस दिशा में रसोई, अग्नि तत्व या अत्यधिक इलेक्ट्रॉनिक उपकरण हों तो मानसिक अशांति और बेचैनी हो सकती है।

2. विकास में रुकावट :

अगर मुख्य द्वार पश्चिम दिशा में गलत स्थान पर हो, तो जीवन में तरक्की धीमी हो सकती है।

3. कर्ज और खर्चे :

इस दिशा में स्टोररूम या भारी वजन की चीजें गलत तरीके से रखने पर आर्थिक हानि, कर्ज और अनावश्यक खर्च बढ़ सकते हैं।

4. स्वास्थ्य समस्याएँ :

यदि इस दिशा में शौचालय या गंदगी हो, तो पाचन तंत्र और त्वचा संबंधी बीमारियाँ हो सकती हैं।

मार्मिक प्रश्नमंच - 231

यौवन का प्रभुत्व कौनसे

ग्रह के आधारित ???

- (1) सूर्य
(2) शुक्र
(3) मंगल
(4) शनि
- प्रश्नमंच 230
जवाब (3)
बुध



विजेता : श्री भरत भाई शेठ

ज्योतिष प्रवेशिका पुस्तक प्राप्त करें

मात्र ₹ 200में। 9428913847



Arham Site

अर्हम् साईट

contact : 8849680131

arhamsite9@gmail.com

जवाब 9428913847 पर

whatsapp करें...

झो द्वारा विजेता को नाम

अर्हम् दैनिक में आयेगा

एवं 13 ₹ ईनाम प्राप्त होगा।

आज के अंक लाभार्थी



ज्ञान प्रचार सहयोगी

बनने हेतु आप भी

अंक लाभार्थी बन

सकते हैं। संपर्क करें

8849680131

www.arhamsite.com

क्लिक करें...

आशीष: प.पू.आ. श्री रविदेव सूरीश्वरजी म.सा

अर्हम् साईट प्रकाशित

अर्हम् दैनिक

अंक : 84 , ता. 23. 6. 2025 , सोमवार , जेठ वद - 13



धर्मलाभ

जहाँ विचार शुद्ध होते हैं,
वहाँ दिशा अपने आप
शुभ बन जाती है।

आचार्य श्री रविदेव सूरीजी



आनंदराज की कलम

~ मुनि आगमप्रिय विजय
{आनंदराज}

उत्तर दिशा को कैसे बनाएं सौभाग्यशाली ?

1. साफ-सफाई और खुलापन बनाए रखें
उत्तर दिशा को हमेशा खुला, साफ
और अव्यवस्थित रहित रखें।
भारी फर्नीचर या अनावश्यक वस्तुएं
उत्तर दिशा में न रखें।
2. जल तत्व का प्रयोग करें
उत्तर दिशा जल तत्व (Water
Element) से जुड़ी होती है, इसलिए यहां
जल से संबंधित चीजें रखें :
छोटी जल फव्वारा (Water
Fountain) या फव्वारेयम।
जल से जुड़ी तस्वीरें या नीले रंग की
पेंटिंग्स।
3. रंगों का प्रयोग
उत्तर दिशा के लिए नीला, आसमानी
और सफेद रंग शुभ माने जाते हैं।
इन रंगों का उपयोग आप दीवारों, पर्दों
या सजावट में कर सकते हैं।

4. धन आकर्षित करने के लिए
उत्तर दिशा करियर और धन से जुड़ी होती है,
इसलिए यहाँ आप :

लक्ष्मी यंत्र, कुबेर यंत्र या शंख स्थापित कर
सकते हैं।

पानी से संबंधित शो-पीस जैसे कांच की
बोट या सिक्कों से भरी कटोरी रख सकते हैं।

5. उत्तर दिशा में क्या न रखें
भारी फर्नीचर, कूड़ा, कबाड़ या पुराने
जूते-चप्पल नहीं रखने चाहिए।

शौचालय या सीढ़ी उत्तर दिशा में नहीं होनी
चाहिए।

6. प्राकृतिक प्रकाश का ध्यान रखें
उत्तर दिशा से अगर सूरज की रोशनी आती
है तो यह बहुत शुभ होता है। रोशनी आने में
बाधा न बनाएं।

7. ऊर्जा को सक्रिय करने के लिए
उत्तर दिशा में क्रिस्टल बॉल या विंड चाइम्स
टांग सकते हैं, जो सकारात्मक ऊर्जा को सक्रिय
करते हैं।

8. उत्तर दिशा करियर और जीवन की दिशा
दर्शाती है, इसलिए यहाँ आप:

अपने लक्ष्य, प्रेरणादायक कोट्स, या
सफलता की तस्वीरें लगा सकते हैं।

मार्मिक प्रश्नमंच - 232

सबसे ज्यादा बलवान

ग्रह कौनसा???

- (1) शनि
- (2) राहु
- (3) गुरु
- (4) सूर्य



प्रश्नमंच 231

जवाब (2)

शुक्र

विजेता : श्री साधना शाह - सुरत

ज्योतिष प्रवेशिका पुस्तक प्राप्त करें

मात्र ₹ 200में । 9428913847



Arham Site

अर्हम् साईट

contact : 8849680131

arhamsite9@gmail.com

जवाब 9428913847 पर

whatsapp करें...

झो द्वारा विजेता को नाम

अर्हम् दैनिक में आयेगा

एवं 13 ₹ ईनाम प्राप्त होगा।

आज के अंक लाभार्थी



ज्ञान प्रचार सहयोगी

बनने हेतु आप भी

अंक लाभार्थी बन

सकते हैं । संपर्क करें

8849680131

www.arhamsite.com

क्लिक करें...

आशीष: प.पू.आ. श्री रविदेव सूरीश्वरजी म.सा

अर्हम् साईट प्रकाशित

अर्हम् दैनिक

अंक : 85 , ता. 24. 6. 2025 , मंगलवार , जेठ वद - 14



धर्मलाभ

आचार्य श्री रविदेव सूरीजी

जो व्यक्ति अपनी जड़ों (पूर्वजों)

को मान देता है, उसकी

उन्नति की शाखाएं

आसमान तक फैलती हैं।



आनंदराज की कलम

~ मुनि आगमप्रिय विजय

{आनंदराज}

दक्षिण दिशा को कैसे बनाएं सौभाग्यशाली ?

1. दक्षिण दिशा में भारी वस्तुएं रखें

यह दिशा स्थिरता से जुड़ी है, इसलिए यहां भारी अलमारी, तिजोरी, या स्टोर यूनिट** रखना शुभ होता है।

इससे जीवन में स्थिरता और आर्थिक मजबूती आती है।

2. दक्षिण दीवार पर प्रेरणादायक तस्वीरें लगाएं

यहाँ आप यशस्वी व्यक्तियों, पर्वत, सूर्यास्त , या अपने पूर्वजों की तस्वीरें लगा सकते हैं।

ये तस्वीरें साहस, सम्मान और आत्मबल को बढ़ाती हैं।

3. रंगों का प्रयोग गहरे और गर्म रंग

दक्षिण दिशा में लाल, मैरून, बैंगनी, गहरे भूरे या नारंगी रंग शुभ माने जाते हैं।

इन रंगों का उपयोग आप पर्दों, दीवारों या सजावट में कर सकते हैं।

4. दक्षिण दिशा में तिजोरी की पीठ रखें

अगर आपकी तिजोरी दक्षिण दीवार से सटकर रखी हो और उसका मुंह उत्तर दिशा की ओर खुले, तो धन का आगमन बढ़ता है और स्थायित्व आता है।

5. पितृ दोष निवारण के लिए

दक्षिण दिशा पितरों से जुड़ी होती है। यहां एक पितरों का कोना बनाकर, हर अमावस्या पर दीपक जलाएं और पितरों को स्मरण करें।

इससे पितृ कृपा प्राप्त होती है और घर में बाधाएं दूर होती हैं।

6. दक्षिण दिशा में मंदिर या रसोईघर न बनाएं

यह दिशा स्थिरता के लिए होती है, इसलिए यहाँ रसोई या पूजा घर बनाना **वास्तु दोष** माना जाता है।

7. दक्षिण दिशा में वॉटर फ्रिजमेंट न रखें

यहाँ पानी से जुड़ी चीजें जैसे फ्रिज, फाउंटेन, या नीला रंग रखने से नुकसान हो सकता है। इससे मानसिक अशांति और आर्थिक हानि हो सकती है।

8. सूर्य की ऊर्जा का स्वागत करें

दक्षिण दिशा सूर्यास्त की दिशा है। यहां बड़े खिड़की या बालकनी हो, तो सूर्य की हल्की रोशनी अंदर आए यह स्वास्थ्य और ऊर्जा के लिए शुभ होता है।

सब कुछ अस्थायी है ।

सुख भी...दुख भी।

जब आप खुश हों, तो इसे

पूरी तरह लीजें,

लेकिन यह याद रखें कि यह

हमेशा नहीं रहेगा।

जब आप दुखी हों, तो भी

यह याद रखें कि

यह भी गुजर जाएगा।

अ
र्ह
म्
वा
णी



Arham Site

अर्हम् साईट

contact : 8849680131

arhamsite9@gmail.com

जवाब 9428913847 पर

whatsapp करें...

झो द्वारा विजेता को नाम

अर्हम् दैनिक में आयेगा

एवं 13 ₹ ईनाम प्राप्त होगा।

आज के अंक लाभार्थी



ज्ञान प्रचार सहयोगी

बनने हेतु आप भी

अंक लाभार्थी बन

सकते हैं । संपर्क करें

8849680131

www.arhamsite.com

क्लिक करें...

आशीष: प.पू.आ. श्री रविदेव सूरेश्वरजी म.सा

अर्हम् साईट प्रकाशित

अर्हम् दैनिक

अंक : 86 , ता. 25. 6. 2025 , बुधवार , जेठ वद - 30



धर्मलाभ

दुःख को मन में मत बसाओ,
वरना वह तुम्हारा होसला
खा जायगा....उसे अनुभव करो,
समझो, और फिर मुस्कराकर
आगे बढ़ जाओ।

आचार्य श्री रविदेव सूरिजी



आनंदराज की कलम

~ मुनि आगमप्रिय विजय

{आनंदराज}

दुःख को थामो नहीं, उसे बह जाने दो

जीवन एक बहुरंगी चित्र की तरह होता है इसमें कभी उजाला होता है, कभी अंधेरा। कभी हँसी की गूँज होती है तो कभी आंसुओं की खामोशी। दुःख जीवन का ऐसा ही एक पहलू है, जिसे टाल तो नहीं सकते, पर उससे टूटना भी कोई हल नहीं।

1. दुःख क्यों आता है?

दुःख जीवन का स्वाभाविक हिस्सा है। यह किसी असफलता, किसी अपने से बिछड़ने, या उम्मीदों के टूटने से आता है। लेकिन यह हमारे जीवन को पूर्ण बनाता है। अगर सिर्फ सुख ही होता, तो हम कभी मजबूत न बन पाते।

"दुःख में ही व्यक्ति का असली चेहरा और उसकी ताकत सामने आती है।"

2. दुःख को दिल पर लेना क्या होता है?

जब हम दुःख को अपने मन में इस तरह बसा लेते हैं कि वह हमारी सोच, हमारे आत्मविश्वास और हमारे भविष्य को जकड़ लेता है, वह धीरे-धीरे भीतर से कमजोर बना देता है।

दुःख क्षणिक है, जीवन नहीं

हर अंधेरी रात के बाद

सुबह होती है। हर तूफान के

बाद आसमान साफ होता है।

ठीक वैसे ही, दुःख भी जाता

है अगर हम उसे जाने दें।

हम जितना उसे पकड़ कर

रखेंगे, वह उतना ही भारी

होता जायगा।

3. दुःख से सीखें, टूटें नहीं

हर दुःख कुछ न कुछ सिखा कर जाता है।

असफलता सिखाती है कि हमें अगली बार क्या नहीं करना है।

बिछड़ना सिखाता है कि हर रिश्ता स्थायी नहीं होता।

तिरस्कार सिखाता है कि आत्मसम्मान कितना जरूरी है।

यदि हम हर दुःख को एक शिक्षा की तरह लें, तो वह जीवन का शिक्षक बन जाता है, न कि बोझ।

4. दुःख को दिल पर न लेने के उपाय

स्वीकृति (Acceptance) : जो हो चुका है, उसे स्वीकार करें। लड़ने से दर्द और बढ़ेगा।

मन की सफाई : दुःख को अपने भीतर जमा न होने दें, किसी से बात करें, लिखें, रो लें लेकिन दबाएं नहीं।

ध्यान और योग : मानसिक शांति पाने का सबसे सरल और असरदार उपाय।

सकारात्मक सोच : हर कठिनाई के पीछे कोई वजह होती है शायद कुछ बड़ा सिखाने के लिए।

कृतज्ञता (Gratitude) : अपने जीवन में जो अच्छा है, उस पर ध्यान दें।

एक दुःख आपका अंत नहीं, बल्कि एक नया आरंभ हो सकता है।

अ
र्ह
म्
वा
णी



Arham Site

अर्हम् साईट

contact : 8849680131

arhamsite9@gmail.com

जवाब 9428913847 पर

whatsapp करें...

झो द्वारा विजेता को नाम

अर्हम् दैनिक में आयेगा

एवं 13 ₹ ईनाम प्राप्त होगा।

आज के अंक लाभार्थी



ज्ञान प्रचार सहयोगी

बनने हेतु आप भी

अंक लाभार्थी बन

सकते हैं। संपर्क करें

8849680131

www.arhamsite.com

क्लिक करें...

आशीष: प.पू.आ. श्री रविदेव सूरेश्वरजी म.सा

अर्हम् साईट प्रकाशित

अर्हम् दैनिक

अंक : 87 , ता. 26. 6. 2025 , गुरुवार , अषाढ सुद - 1



धर्मलाभ

मोबाइल एक साधन है ,
साध्य नहीं । इसका
उपयोग करो...पर इसे !
खुद पर हावी मत होने दो ।

आचार्य श्री रविदेव सूरिजी



आनंदराज की कलम

~ मुनि आगमप्रिय विजय
{आनंदराज}

" मोबाइल का जादू या जाल "

मोबाइल का अत्यधिक अनुचित उपयोग हमारे मानसिक, शारीरिक और सामाजिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है, जिससे व्यक्ति कमजोर महसूस कर सकता है।

1. मानसिक रूप से कमजोर बनाना :

डोपामिन की लत : सोशल मीडिया या गेमिंग से तुरंत आनंद (dopamine) मिलता है, जिससे दिमाग धीरे-धीरे उसी पर निर्भर हो जाता है।

एकाग्रता में कमी : लगातार नोटिफिकेशन और स्कॉलिंग से फोकस करना कठिन हो जाता है।

नींद में बाधा : देर रात तक मोबाइल चलाने से नींद की गुणवत्ता घटती है, जिससे थकान और मानसिक कमजोरी आती है।

तनाव और अवसाद : सोशल मीडिया पर दूसरों से तुलना करना आत्मविश्वास को घटा सकता है।

मोबाइल से निकलने वाली नीली रोशनी (Blue Light) केवल नींद ही नहीं, आपकी त्वचा को भी नुकसान पहुँचा सकती है। रिसर्च के अनुसार, लंबे समय तक स्क्रीन एक्सपोजर त्वचा की उम्र बढ़ा सकता है और दाग-धब्बे ला सकता है — ठीक वैसे ही जैसे सूरज की किरणें।

अ
र्ह
म्
वा
णी

2. शारीरिक रूप से कमजोर बनाना :

आंखों पर प्रभाव : स्क्रीन पर ज्यादा समय बिताने से आंखों में जलन, दर्द और नजर कमजोर हो सकती है।

कसरत में कमी : मोबाइल के कारण लोग बाहर जाना, खेलना या चलना-फिरना कम कर देते हैं।

पोश्चर खराब होना : लगातार गर्दन झुकाकर मोबाइल देखने से "टेक नेक" या पीठ दर्द जैसी समस्याएं होती हैं।

3. सामाजिक रूप से कमजोर बनाना :

सीधा संवाद घट जाता है : लोग आमने-सामने बातचीत की बजाय चैटिंग में ज्यादा समय बिताते हैं, जिससे सामाजिक कौशल घटते हैं।

परिवार से दूरी : घर में भी हर कोई अपने-अपने मोबाइल में व्यस्त रहता है, जिससे रिश्तों में दूरियाँ आती हैं।

समाधान ::

मोबाइल उपयोग के लिए समय निर्धारित करें। नींद से पहले मोबाइल का उपयोग बंद करें। सप्ताह में कुछ दिन " डिजिटल डिटॉक्स " करें।

पढ़ाई, खेल या किसी शौक में समय बिताएं।



Arham Site

अर्हम् साईट

contact : 8849680131

arhamsite9@gmail.com

जवाब 9428913847 पर

whatsapp करें...

झो द्वारा विजेता को नाम

अर्हम् दैनिक में आयेगा

एवं 13 ₹ ईनाम प्राप्त होगा।

आज के अंक लाभार्थी



ज्ञान प्रचार सहयोगी

बनने हेतु आप भी

अंक लाभार्थी बन

सकते हैं । संपर्क करें

8849680131

www.arhamsite.com

क्लिक करें...

आशीष: प.पू.आ. श्री रविदेव सूरेश्वरजी म.सा

अर्हम् साईट प्रकाशित

अर्हम् दैनिक

अंक : 88 , ता. 27. 6. 2025 , शुक्रवार , अषाढ सुद - 2



धर्मलाभ

मृत्यु हमें डराने नहीं, जीवन को
सही जीने की सीख देने आती है;
जो हर पल को सार्थक बनाता है,
वही अमर हो जाता है।

आचार्य श्री रविदेव सूरिजी



आनंदराज की कलम

~ मुनि आगमप्रिय विजय
{आनंदराज}

" मृत्यु से डरें नहीं सिखें "

1.

" जीवन क्षणभंगुर है, इसे सार्थक बनाओ। "
मृत्यु हमें याद दिलाती है कि जीवन बहुत
छोटा है। इसलिए हर पल को सही तरीके से
जीना, सार्थक कार्य करना और अच्छे कर्म
करना जरूरी है।

अच्छे कर्म करो, कल का भरोसा नहीं।

2. "मोह-माया अस्थायी है,
संबंधों को महत्व दो।"

मृत्यु के बाद न धन साथ जाता है, न
पदवी, न प्रतिष्ठा। केवल अच्छे कर्म और
प्रेम भरे संबंध ही अमर रहते हैं।
लोगों के दिलों में जगह बनाओ,
संपत्ति में नहीं।

3.

"अहंकार छोड़ो, विनम्रता अपनाओ।"
मृत्यु हमें सिखाती है कि अंत में सबको
एक ही मिट्टी में मिलना है।
न कोई बड़ा रहता है, न छोटा।
"जो आज गर्व में है, कल वही धूल में है।"

4. "अनिश्चितता को स्वीकारो,
वर्तमान में जीना सीखो।"

मृत्यु की निश्चितता और
समय की अनिश्चितता
हमें सिखाती है कि भविष्य की
चिंता में वर्तमान को बर्बाद न करें।
" कल का भरोसा नहीं,
आज को सार्थक बनाओ। "

5. "अच्छे कर्म ही अमरत्व देते हैं।"

मृत्यु के बाद केवल हमारा
नाम, कर्म और चरित्र लोगों की
यादों में जिंदा रहता है।
धन-दौलत नहीं,
नेक कर्म अमर रहते हैं।

अ
र्ह
म्
वा
णी

जीवन क्षणिक, समय है कम,
कर्म करो अच्छे हरदम।
मोह-माया सब यहीं रह जाए,
प्यार के रिश्ते साथ ही जाए।
अहंकार छोड़ो, विनम्र बनो,
हर पल को जी लो, अमर बनो।

आज के अंक लाभार्थी

**एक सुश्रावक
बेंगलोर**

Arham Site
अर्हम् साईट

contact : 8849680131

arhamsite9@gmail.com

www.arhamsite.com

आशीष: प.पू.आ. श्री रविदेव सूरेश्वरजी म.सा

अर्हम् साईट प्रकाशित

अर्हम् दैनिक

अंक : 89 , ता. 28. 6. 2025 , शनिवार , अषाढ सुद - 3



पाप से डरना ही सच्चे इंसान की पहचान है... क्योंकि जो अंतरात्मा से हार नहीं मानता...वह संसार की हर परीक्षा में जीत जाता है....

धर्मलाभ

आचार्य श्री रविदेव सूरेश्वरजी



आनंदराज की कलम

~ मुनि आगमप्रिय विजय

{आनंदराज}

" ईमान की असली कीमत "

एक गाँव में राघव नाम का एक गरीब किसान रहता था। वह दिन-रात मेहनत करता, पर कभी पेट भर खाना भी मुश्किल से जुटा पाता।

एक दिन, खेत जोतते समय उसे सोने की एक थैली मिली। थैली में बहुत सारा सोना था। राघव की आँखें चमक उठीं, पर तभी उसका अंतरात्मा बोली "यह तुम्हारा नहीं है, राघव। याद रखो, पराया हक खाना भी पाप है।"

पास ही के जमींदार की मुठ्ठी में कांपती आवाज़ थी " हाय ! मेरा सोना खो गया ! "

राघव के मन में संघर्ष था।

अगर वह सोना रख लेता, तो गरीबी से छुटकारा पा सकता था। लेकिन फिर उसे

अपनी माँ की कही एक बात याद आई... " बेटा, पाप की कमाई पेट नहीं भरती, आत्मा जलाती है। "

राघव दौड़कर थैली लेकर जमींदार के पास पहुँचा और बोला... " मालिक ! यह थैली आपकी होगी, मुझे खेत में मिली। " जमींदार की आँखों में आँसू आ गए।

उसने कहा:

" राघव, आज तुमने मुझे मेरा सोना ही नहीं, इंसानियत पर मेरा विश्वास भी लौटा दिया। " जमींदार ने राघव को इनाम में आधा खेत दे दिया।

राघव मुस्कुराते हुए बोला.... " साहब, इनाम तो अच्छा है , पर असली सुख तो इस बात में है कि मैंने पाप का बोझ नहीं उठाया। "

:~: " सीख " :~:

पाप का डर वही रखता है, जिसकी आत्मा जागृत होती है।

जो सही राह चुनता है, उसके पास भले दौलत न हो, पर उसका मन सदा अमीर रहता है। "

अ
र्ह
म्
वा
णी

पाप की डोरी छोटी है, पर बंधन गहरा होता है, क्षणिक सुख भले दे दे, पर मन सदा ही रोता है। सच की राह कठिन सही, पर अंत में सुख लाती है, निर्मल मन का दीपक बनकर, अंधियारा सब हर जाती है।

लोभ में मत खो जाना, सत्य से मत मुंह मोड़ो, पाप से डरते जो चलते, उनके द्वार खुदा भी जुड जाते है।

आज के अंक लाभार्थी

**एक सुश्रावक
बेंगलोर**

Arham Site
अर्हम् साईट

contact : 8849680131

arhamsite9@gmail.com

www.arhamsite.com

आशीष: प.पू.आ. श्री रविदेव सूरीश्वरजी म.सा

अर्हम् साईट प्रकाशित

अर्हम् दैनिक

अंक : 90 , ता. 29. 6. 2025 , रविवार , अषाढ सुद - 4



धर्मलाभ

प्रकृति की गोद में छिपा है ।

स्वास्थ्य का खजाना...

गिलोय है वह संजीवनी ,

जो दे तन-मन को नयाना ।

आचार्य श्री रविदेव सूरीजी



आनंदराज की कलम

~ मुनि आगमप्रिय विजय

{आनंदराज}

" योग प्रतिकाशक गिलोय "

1. इम्यूनिटी बढ़ाने के लिए

1 चम्मच गिलोय रस

1 चम्मच आंवला रस

कैसे लें: सुबह खाली पेट

लाभ : शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता को दोगुना बढ़ाता है।

2. बुखार (खासकर डेंगू, मलेरिया, टाइफाइड) में

गिलोय की डंठल के 4-5 टुकड़े

7 तुलसी की पत्तियाँ , 2 कप पानी

विधि: उबालकर आधा रह जाने पर सुबह-शाम पिएँ।

लाभ: प्लेटलेट्स बढ़ाता है, बुखार नियंत्रित करता है।

3. मधुमेह (डायबिटीज) में

1 चम्मच गिलोय रस , ½ चम्मच नीम का

रस लें... सुबह खाली पेट , लाभ : रक्त

शर्करा के स्तर को नियंत्रित करता है।

4. गठिया और जोड़ों के दर्द में

1 चम्मच गिलोय पाउडर + 1 चम्मच सोंठ

कैसे लें: गुनगुने पानी के साथ सुबह-शाम।

लाभ: सूजन और दर्द दोनों में राहत।

5. फलर्जी और त्वचा रोगों में

1 चम्मच गिलोय रस + 1 चम्मच नीम रस

कैसे लें : रोज सुबह

लाभ: खुजली, दाद, एक्जिमा और

सोरायसिस में लाभकारी ।

6. पेट की चर्बी घटाने के लिए

गिलोय चूर्ण 1 चम्मच + त्रिफला चूर्ण

1 चम्मच , कैसे लें: रात को गुनगुने

पानी के साथ। लाभ: मेटाबॉलिज्म

तेज करता है, वजन कम करता है।

गिलोय की बेल कभी मिट्टी में नहीं उगती

गिलोय की बेल जब किसी पेड़ पर चढ़ती है, तब

उसके गुण उस पेड़ के अनुसार बदल जाते हैं।

नीम पर चढ़ी गिलोय → सर्दी-जुकाम, मधुमेह और

त्वचा रोगों में सर्वोत्तम

आंवले पर चढ़ी गिलोय → यकृत (लीवर), पित्त

और बुखार में अधिक असरदार

पीपल पर चढ़ी गिलोय → मानसिक रोग और

हृदय रोग में श्रेष्ठ

इसे "संस्कारित गिलोय" कहा जाता है।

अ
र्ह
म्
वा
णी

आज के अंक लाभार्थी

एक सुश्रावक

बेंगलोर

Arham Site
अर्हम् साईट

contact : 8849680131

arhamsite9@gmail.com

www.arhamsite.com